2. (i) भारत में बेरोजगारी की प्रकृति एवं मात्रा का विवरण दें। इसके समाधान के लिए सरकार ने क्या कदम उठाए हैं?

Ans → सामान्यतया जब एक व्यक्ति को अपने जीवन-निर्वाह के लिए कोई कार्य नहीं मिलता है तो उस व्यक्ति को बेरोजगार तथा इस समस्या को बेरोजगारी की समस्या कहते हैं। दूसरे शब्दों में "जब कोई व्यक्ति कार्य करने को इच्छुक है और शारीरिक रूप से कार्य करने में समर्थ भी है, लेकिन उसको कोई कार्य नहीं मिलता जिससे कि वह जीविका कमा सके तो इस प्रकार की समस्या बेरोजगारी की समस्या कहलाती है।"

भारत में बेरोजगारी का सही पता लगाना आसान नहीं है क्योंकि विश्वसनीय आंकड़ों का अभाव है। ऐसा अनुमान है कि प्रथम योजना के प्रारंभ में 33 लाख लोग बेरोजगार थे लेकिन यह संख्या बराबर बढ़ती जा रही है। वर्तमान में लगभग रोजगार कार्यालयों में 4 करोड़ 4 लाख व्यक्ति के नाम बेरोजगार के रूप में पंजीकृत हैं।

* भारत में बेरोजगारी का स्वभाव एवं प्रकार

भारत में बेरोजगारी विभिन्न स्वभाव की है जिसको निम्नप्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है →

(1) संरचनात्मक बेरोजगारी :→ भारत में बेरोजगारी इसी प्रकार की है। जब देश में पूँजी के साधन सीमित होते हैं और काम चाहने वालों की संख्या बराबर बढ़ती जाती है तो कुछ व्यक्ति बिना काम के ही रह जाते हैं। क्योंकि उनके लिए पर्याप्त पूँजी की व्यवस्था

Scanned by CamScanner

नहीं होते हैं। इस प्रकार की बेरोजगारी ज्यादातर विकासशील देशों में पायी जाती है तथा यह दीर्घकालीन होता है।

(2) अल्परोजगार :→ जब किसी व्यक्ति को अपनी क्षमता के अनुसार कार्य नहीं मिलता है या पूरा काम नहीं मिलता है तो इसे अल्परोजगार कहते हैं। जैसे एक इंजीनियरिंग की डिग्री प्राप्त व्यक्ति लिपिक के रूप में या श्रमिक के रूप में कार्य करता है तो इसको अल्प-रोजगार कहते हैं। ऐसा व्यक्ति कार्य करता तो दिखाई पड़ता है लेकिन उसकी पूर्ण क्षमता का उपयोग नहीं होता है।

(3) खुली बेरोजगारी :→ "जब व्यक्ति कार्य करने के योग्य है और वे कार्य करना चाहते हैं लेकिन उनको कार्य नहीं मिलता है तो ऐसी स्थिति को खुली बेरोजगारी कहते हैं।" यहाँ लोग ऐसा है जो शिक्षित, तकनीकी योग्यता प्राप्त है लेकिन काम करने का अवसर नहीं मिल रहा है।

(4) मौसमी बेरोजगारी :→ इस तरह की बेरोजगारी साल के कुछ समय में हो जाती है। भारत में यह कृषि के क्षेत्र में पायी जाती है। कृषि के जुताई, बोआई, और कटाई के समय में काम मिलता है और बाकी समय में ये बेकार रहते हैं। इसे मौसमी बेरोजगारी कहते हैं।

(5) शिक्षित बेरोजगारी :→ यह खुली बेरोजगारी का ही रूप है। इसमें शिक्षित व्यक्ति बेरोजगार होते हैं। शिक्षित बेरोजगारी में कुछ व्यक्ति अल्प-रोजगार की स्थिति में होते हैं जिन्हें रोजगार मिला रहता है लेकिन वह उनकी शिक्षा के अनुरूप नहीं

Scanned by CamScanner

रहता है। वर्तमान में सभी कुल पंजीकृत बेरोजगारों में से 60% शिक्षित बेरोजगार है।

(6) छिपी हुई बेरोजगारी :- बेरोजगारी का यह रूप दिखाई नहीं देता है। यह छिपा रहता है। भारत में इस प्रकार की बेरोजगारी कृषि के क्षेत्र में पायी जाती है जिसमें आवश्यकता से अधिक व्यक्ति लगे-हुए होते हैं। ऐसे व्यक्ति से उत्पादन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। ऐसे व्यक्ति छिपी हुई बेरोजगारी के अन्तर्गत आते हैं। नर्कसे के अनुसार घनी आबादी वाले देश में छिपी बेरोजगारी कृषि क्षेत्र में 25% से 33% की होती है। इनकी सीमान्त उत्पादकता शून्य होती है।

(7) घर्षणात्मक बेरोजगारी :- बाजार की दशाओं में परिवर्तन मांग एवं पूर्ति की शक्तियों में परिवर्तन होने से उत्पन्न बेरोजगारी को घर्षणात्मक बेरोजगारी कहते हैं।

(8) शहरी बेरोजगारी :- शहरी क्षेत्र में प्रायः खुले किस्म की बेरोजगारी पायी जाती है इनमें 8 औद्योगिक एवं शिक्षित बेरोजगारी को सम्मिलित किया जा सकता है। देश की बेरोजगारी में शहरी बेरोजगारी का भाग 38% है।

(9) ग्रामीण बेरोजगारी :- भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी की भीषण समस्या पायी जाती है। जिसे ग्रामीण अथवा कृषि संबंधित बेरोजगारी कहते हैं। चूंकि भारत में कृषि की प्रधानता है अतः बेरोजगारी की यह समस्या मुख्यतः ग्रामीण क्षेत्रों में केन्द्रित है। इस प्रकार की बेरोजगारी 62% होने का अनुमान है। लेकिन हमारे यहां बेरोजगारी के सही आंकड़ों का अभाव है।

Scanned by CamScanner